पूर्ण पाठ · निःशुल्क PDF

बजरंग बाण

दोहा · चौपाई · समापन दोहा

Vista Hub · vhoriginal.com
साफ टाइप · प्रिंट के लिए तैयार

दोहा

निश्चय प्रेम प्रतीति ते, विनय करें सनमान।

तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करें हनुमान॥

चौपाई

1–8

जय हनुमंत संत हितकारी। सुन लीजै प्रभु अरज हमारी॥

जन के काज विलम्ब न कीजै। आतुर दौरि महा सुख दीजै॥

जैसे कूदि सिन्धु महि पारा। सुरसा बदन पैठि विस्तारा॥

आगे जाय लंकिनी रोका। मारेहु लात गई सुरलोका॥

जाय विभीषण को सुख दीन्हा। सीता निरखि परम पद लीन्हा॥

बाग उजारि सिन्धु महँ बोरा। अति आतुर यमकातर तोरा॥

अक्षयकुमार मारि संहारा। लूम लपेटि लंक को जारा॥

लाह समान लंक जरि गई। जय जय धुनि सुरपुर नभ भई॥

चौपाई (जारी)

9–16

अब बिलम्ब केहि कारन स्वामी। कृपा करहु उर अन्तरयामी॥

जय जय लखन प्रान के दाता। आतुर ह्वै दुःख करहु निपाता॥

जै हनुमान जयति बलसागर। सुर समूह समरथ भटनागर॥

ॐ हनु हनु हनु हनुमंत हठीले। बैरिहि मारू बज्र की कीले॥

गदा बज्र लै बैरिहि मारो। महाराज प्रभु दास उबारो॥

ओंकार हुँकार महाप्रभु धावो। बज्र गदा हनु बिलम्ब न लावो॥

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमंत कपीसा। ॐ हुं हुं हुं हनु अरि उर सीसा॥

सत्य होहु हरि सपथ पाई कै। राम दूत धरु मारु धाई कै॥

चौपाई (जारी)

17–24

जय जय जय हनुमंत अगाधा। दुःख पावत जन केहि अपराधा॥

पूजा जप तप नेम अचारा। नहिं जानत कछु दास तुम्हारा॥

बन उपबन मग गिरि गृह माहीं। तुम्हरे बल हम डरपत नाहीं॥

जय अंजनि कुमार बलवंता। शंकर सुवन बीर हनुमंता॥

बदन कराल काल कुल घालक। राम सहाय सदा प्रतिपालक॥

भूत प्रेत पिसाच निशाचर। अगिन बेताल काल मारी मर॥

इन्हें मारू तोहि सपथ राम की। राखु नाथ मरजाद नाम की॥

जनकसुता हरि दास कहावौ। ताकी सपथ बिलम्ब न लावौ॥

चौपाई (जारी)

25–32

जै जै जै धुनि होत अकासा। सुमिरत होत दुसह दुःख नासा॥

चरन पकरि कर जोरि मनावौं। यहि अवसर अब केहि गोहरावौं॥

उठु उठु चलु तोहि राम दुहाई। पाँय परौं कर जोरि मनाई॥

ॐ चं चं चं चं चपल चलंता। ॐ हनु हनु हनु हनु हनुमंता॥

ॐ हं हं हाँक देत कपि चंचल। ॐ सं सं सहमि पराने खलदल॥

अपने जन को तुरत उबारौ। सुमिरत होय आनंद हमारौ॥

यह बजरंग बाण जेहि मारै। ताहि कहौ फिरि कौन उबारै॥

पाठ करै बजरंग बाण की। हनुमत रक्षा करै प्रान की॥

समापन

यह बजरंग बाण जो जापै। तासौं भूत प्रेत सब काँपै॥

धूप देय जो जपै हमेशा। ताके तन नहिं रहै कलेशा॥

दोहा

उर प्रतीति दृढ़ सरन ह्वै, पाठ करै धरि ध्यान।

बाधा सब हर करै सब काम, सफल हनुमान॥

॥ बजरंग बाण समाप्त ॥

यह पाठ स्वयं टाइप किया गया है · Vista Hub